गुरुदेवश्री के मुखारविन्द से ....

जब **धर्म के दशलक्षण** पुस्तक लिखी जा चुकी थी और **क्रमबद्धपर्याय** लिखी जा रही थी, उसकी अनेक किश्तें आत्मधर्म के संपादकीय के रूप में प्रकाशित हो चुकी थी; तब आज से लगभग 31 वर्ष पहले सन् 1978-79 में आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मुख से प्रवचन करते समय डॉ. हुकमचंद भारिल्ल व उनकी कृति क्रमबद्धपर्याय और धर्म के दशलक्षण के संबंध में जो उद्‌गार प्रगट हुये; उनके महत्वपूर्ण अंश समयसार सिद्धि भाग-8 (गुजराती), पृष्ठ-298, 299 पर छपा है; जिन्हें चेन्नई के एक भाई ने हमें जैनपथ प्रदर्शक में प्रकाशनार्थ भेजा है, उनकी भावना के अनुसार सभी पाठकों के लाभार्थ यहां उन उद्‌गारों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है । **– प्रबन्ध सम्पादक**

''सोनगढ का विरोध उपादान, निमित्त, निश्चय, व्यवहार एवं क्रमबद्धपर्याय ह्न इन पांच बातों को लेकर है, यदि एक क्रमबद्धपर्याय का सही निर्णय हो जाये तो सब विरोध समाप्त हो जायें। ये कार्य पण्डित हुकमचंदजी कर रहे हैं, वे क्रमबद्धपर्याय पर लिख रहे हैं, उन्होंने इस विषय पर अनेक लेख लिखे हैं, वे इस विषय पर एक पुस्तक बनानेवाले हैं।

उन्होंने दशलक्षणपर्व और दशलक्षणधर्म पर बहुत अच्छा लिखा है। धर्म के दशलक्षणों पर उन जैसी कृति अभी तक किसी ने नहीं लिखी।

पंडित जगन्मोहनलालजी पुराने पंडित है, 80 वर्ष की उम्र है। पंडित कैलाशचंदजी, फूलचंदजी भी बड़ी उम्र के हैं। ये (डॉ. भारिल्ल) छोटी उमर के हैं; फिर भी सभी ने इनकी तारीफ की है। पण्डित जगन्मोहनलालजी लिखते हैं कि **पण्डित हुकमचंद को सरस्वती का वरदान प्राप्त है।**

भारिल्लजी सब पण्डितों में अग्रेसर हैं। आयु तो अभी 44 वर्ष की है; पर दिमाग, क्षयोपशम.... आहाहा.....।''

किसी भाई ने बीच में ही कहा कि वे आपके पास सुनकर गये हैं न ?

गुरुदेवश्री बोले - ''लोग तो ऐसा कहेंगे ही; पर उन्होंने जो लिखा है, वह सब यहाँ से सुना हुआ कहाँ है ? अरे, भाई ! उनकी अपनी शक्ति है न, क्षयोपशम की शक्ति है। दशलक्षणधर्म का विस्तार अभी तक किसी पंडित ने ऐसा नहीं किया है। ऐसा विस्तार ....आहाहा.।

जगन्मोहनलालजी की भी कितनी निर्मानता, अन्यथा बहुत वांचनवाले पुराने पण्डित, 44 साल के नये पण्डित के लिये कहते हैं कि उन्हें सरस्वती का वरदान है। ऐसे तो 38 पण्डितों ने डॉ. भारिल्ल का अभिनंदन किया है। एक श्वेताम्बर और 37 दिगम्बर पण्डितों ने अभिनंदन किया है।

अहो ! धर्म के दशलक्षण में गजब किया है, बहुत स्पष्टता की है; क्रमबद्ध पर्याय में भी गजब करेगा।''

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 28 319 अंक : 7

आतम रूप अनुपम...

आतम रूप अनुपम अद्भुत, याहि लखैं भव सिंधु तरो।।
आतम रूप अनुपम ...।।
अल्पकाल में भरत चक्रधर, निज आतम को ध्याय खरो।
केवलज्ञान पाय भवि बोधे, ततछिन पायौ लोक सिरो।।
आतम रूप अनुपम ...।।1।।
या बिन समुझे द्रव्यलिंग मुनि, उग्र तपन कर भार भरो।
नव ग्रीवक पर्यन्त जाय चिर, फेर भवार्णव मांहि परो।।
आतम रूप अनुपम ...।।2।।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरन तप, ये ही जगत में सार नरो।
पूरब शिव को गये जांहि अब, फिर जैहैं यह नियत करो।।
आतम रूप अनुपम ...।।3।।
कोटि ग्रंथ को सार यही है, ये ही जिनवाणी उचरो।
'दौल' ध्याय अपने आतम को, मुक्ति-रमा तव वेग वरो।।
आतम रूप अनुपम ...।।4।।

छहढाला प्रवचन

मिथ्याचारित्र का स्वरूप

जो कुगुरु-कुदेव-कुधर्म सेव, पोषै चिर दर्शनमोह एव।
अन्तर रागादिक धरैं जेह, बाहर धन-अम्बरतैं सनेह।।९।।
धारैं कुलिंग लहि महत भाव, ते कुगुरु जन्मजल उपल नाव।
जो राग-द्वेष मलकरि मलीन वनिता-गदादिजुतचिह्नचीन।।१०।।
ते हैं कुदेव तिनकी जु सेव, शठ करत न तिन भवभ्रमण छेव।
रागादि भावहिंसा समेत, दर्वित त्रस-थावर मरण खेत।।११।।
जे क्रिया तिन्हैं जानहु कुधर्म, तिन सरधै जीव लहै अशर्म।
याकूँ गृहीत मिथ्यात्व जान, अब सुन गृहीत जो है अज्ञान।।१२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

जो भगवान का स्वरूप भी विपरीत माने, वे आत्मा के शुद्धस्वरूप को कैसे पहचानेंगे ? जीव अपने इष्ट देव का जैसा स्वरूप माने, वैसा स्वयं भी होना चाहे, अतः देव के स्वरूप में जिसकी भूल होगी, उसको अपने स्वरूप में भी भूल होगी। रागी-द्वेषी जीव स्वयं अपने भव-भ्रमण का अन्त नहीं कर सकते, तब फिर उनकी उपासना से अन्य जीव कैसे तिरेंगे ?

रागी-अज्ञानी को भजने से तो राग की ही पुष्टि होती है। देव अर्थात् इष्टपद को प्राप्त भगवान, इष्ट पद तो वीतरागता और सर्वज्ञता है; क्योंकि जीवों को सुख इष्ट है और पूर्ण सुख तो वीतरागता तथा सर्वज्ञता में ही है; अतः सर्वज्ञ-वीतराग के सिवाय अन्य कोई देव नहीं है।

अहा ! सर्वज्ञ-वीतरागदेव, जिन्होंने दिव्यध्वनि में भी इच्छा रहित सर्वज्ञस्वभाव और वीतरागी मोक्षमार्ग दिखाया, - उनके सिवाय रागी-द्वेषी कुलिंगी को जो

पूजते हैं, वे तो बड़े मूर्ख हैं, वे मिथ्यात्व की पुष्टि से अनन्तकाल तक भवभ्रमण में रुलेंगे और दुःखी होंगे।

अतएव संसार-दुःख का जिनको भय हो और आत्मा के सुख को जो चाहते हों, वे कुदेव का सेवन छोड़कर, सर्वज्ञवीतरागदेव को पहचाने और बड़ी भक्ति से उनका सेवन करे ।

श्री कुन्दकुन्दस्वामी प्रवचनसार में कहते हैं कि - अरिहंत देव के शुद्धद्रव्य-गुण-पर्याय को जो जीव पहचानते हैं, वे अपने आत्मा के शुद्धस्वरूप को भी पहचानते हैं और उनके मोह का क्षय होकर सम्यग्दर्शन होता है। अहो, अरिहन्त भगवान के आत्मा का द्रव्य शुद्ध चेतनामय, उनके गुण भी शुद्ध चैतन्यरूप और उनकी पर्याय भी शुद्ध चेतनारूप, उनमें कहीं भी राग नहीं है, जैसा उनके आत्मा का शुद्धस्वभाव है; परमार्थ से वैसा ही इस आत्मा का शुद्धस्वभाव है - ऐसी पहचान करने से रागादि परभावों के साथ एकत्वबुद्धि छूटकर परिणति अंतर-स्वभाव में एकाग्र होती है, शुद्धस्वभाव में पर्याय की एकता होने पर मोह का अभाव हो जाता है अर्थात् सम्यग्दर्शन होता है। ऐसे जीव ने ही अरिहन्तदेव के परमार्थ स्वरूप को पहचाना और उसने ही सच्चे भाव से 'णमो अरिहन्ताणं' किया।

अरिहंत की पहचान के बिना उनका जो नाम लेते हैं, उनको तो नामनिक्षेप भी सच्चा नहीं है; क्योंकि सच्चा निक्षेप नयपूर्वक होता है और नय सम्यक् श्रुतज्ञानपूर्वक ही होता है। अज्ञान में कोई नय या निक्षेप सच्चा नहीं होता। सर्वज्ञ की मूर्ति में भी सर्वज्ञदेव की स्थापना का निक्षेप है, अतः वह भी राग-द्वेष के चिह्नों से रहित ही होती है (जिन प्रतिमा जिनसारखी···) जिसके देखने से सर्वज्ञ वीतराग का स्वरूप लक्ष्य में आवे ह्न ऐसी मूर्ति जैनशासन में मान्य है, और उसमें सच्चा स्थापना निक्षेप होता है। सारे विश्व को जाननेवाले; परन्तु करनेवाले नहीं किसी का, ऐसे सर्वज्ञ-वीतरागदेव और उनकी प्रतिमा पूज्य है, उनसे विरुद्ध कोई पूज्य नहीं है। इतनी पहचान करे, तब गृहीतमिथ्यात्व छूटे और आत्मा की पहचान करे, तब अगृहीत मिथ्यात्व छूटकर सम्यग्दर्शन होता है। **(क्रमशः)**

नियमसार प्रवचन

निज आत्मा ही उपादेय है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 38 वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

जीवादिबहित्तच्चं हेयमुवादेयमप्पणो अप्पा।
कम्मोपाधिसमुब्भवगुणपज्जाएहिं वदिरित्तो ।।३८।।

(हरिगीत)

जीवादि जो बहितत्त्व हैं, वे हेय हैं कर्मोपधिज।
पर्याय से निरपेक्ष आतमराम ही आदेय है।।३८।।

जीवादि बाह्यतत्त्व हेय हैं; कर्मोपाधिजनित गुणपर्यायों से निरपेक्ष आत्मा ही आत्मा को उपादेय हैं।

(गतांक से आगे...)

वे मुनिराज कैसे हैं?

(१) सहजवैराग्यरूपी महल के शिखर के शिखामणि हैं - आत्मा के भानसहित मुनि अपने स्वरूप की अन्तररमणता में हजारों बार झूलते हैं, आनन्दकन्द में झूलते हुए अमृतरस का अनुभव लेते हैं। वे सहज-स्वाभाविक वैराग्यवाले हैं, हठपूर्वक वैराग्यवाले नहीं हैं अथवा उनको मोहगर्भित वैराग्य नहीं है। परनिमित्त से, शुभभाव से तथा पंच महाव्रतादि के परिणाम से उदास हैं, शुद्धचैतन्यस्वभावी हैं।

अज्ञानी जीव कहते हैं कि ''स्त्री, पुत्रादि संसार के कारण हैं; अतः उनके प्रति तीव्र द्वेष करके हेयबुद्धि करने से, उन्हें सुख का कारण मानना छूट जायेगा और वैराग्य होगा।'' - ऐसा माननेवाला जीव अनन्तानुबंधी के तीव्रद्वेषसहित मिथ्यादृष्टि है। मुनियों के लिये तो सर्व पर-द्रव्य ज्ञेय हैं, वे किसी भी द्रव्य को लाभ-हानिकारक नहीं मानते। सहजस्वभाव में लीनता बढ़ने पर स्वाभाविक वैराग्य वर्तता है तथा बाह्याभ्यंतर परिग्रहरहित निर्ग्रन्थदशा वर्तती है - ऐसे मुनि वैराग्यरूपी महल के शिखर के चूड़ामणि समान हैं अर्थात् उनके विशेष वैराग्यदशा वर्तती है।

(२) परद्रव्य से पराङ्मुख हैं - ''मैं आत्मा परिपूर्ण हूँ'' - इसप्रकार जीव का रागसहित विकल्प एवं ''अजीव की क्रिया अजीव से होती है, मैं शुद्धकारणपरमात्मा हूँ,

मेरे कारण अजीव में कुछ भी नहीं होता, मेरे कारण तो निर्मलपर्याय प्रकट होती है'' - ऐसे सातत्त्वों के भिन्न-भिन्न विकल्पोंरूपी परद्रव्य से मुनि उदास हैं। उन विकल्पों के प्रति उनकी सन्मुखता नहीं है। ऐसे भावलिंगी मुनिराज विकल्पों से भी उदास हैं तो फिर बाह्य पदार्थों के प्रति अत्यन्त उदास हैं ही। उनके वस्त्र का परिग्रह नहीं होता, जो वस्त्रसहित मुनिपना माने वह मिथ्यादृष्टि है। मुनि के तो बाह्याभ्यन्तर निर्ग्रन्थदशा ही वर्तती है - ऐसा त्रिकाल अबाधित नियम है।

(३) पंचेन्द्रियों के फैलावरहित देहमात्र परिग्रह है - अपनी भावेन्द्रियाँ परपदार्थों को विषय करके खण्ड-खण्ड नहीं होती, उनका झुकाव मुख्यरूपेण स्वभाव की तरफ ही है। पर की ओर जाने पर ज्ञान संकोच पाता था, वह अब स्वभाव की ओर ढलकर विकास को प्राप्त होता है। जिनके देहमात्र परिग्रह है, मोरपीछी तथा कमण्डल तो तब परिग्रह होते हैं, जब उनके ऊपर लक्ष्य जाता है; अतः उनकी गणना अपवादिक परिग्रह में की है। देह भी अपवादिक है; किन्तु आयुपर्यन्त साथ में रहती है, छोड़ी नहीं जा सकती; इसलिये शरीर अकेले को परिग्रह में गिना गया है। मुनि को शरीर का राग विशेषतः छूट गया है, इसलिये शरीर को सर्दी-गर्मी से बचाने के लिए वस्त्र ग्रहण करूँ या छोडूँ - ऐसा विकल्प सहज ही नहीं उठता; अतः बाह्य नग्न दिगम्बरदशा वर्तती है।

(४) जो परम जिनयोगीश्वर हैं - मुनि आत्मा के स्वभाव में उत्कृष्टरूप से लीनता करके स्वरूप-साधना कर रहे हैं। चतुर्थगुणस्थान में आत्मा का भान हुआ, अत: सम्यग्दृष्टि भी योगी है; परन्तु अभी स्वरूप में विशेष लीनता नहीं है। मुनि तो आत्मस्वरूप में बार-बार लीन होते हैं; अतः उन्हें योगीश्वर कहा है।

अन्यमत वाले अमुक प्रकार का ध्यान करने के कारण योगी कहे जाते हैं, वे वास्तव में योगी नहीं; अपितु योगाभासी हैं। इसीकारण यहाँ जिनयोगीश्वर कहा गया है।

जिसको आत्मा का भान नहीं होता, उसको योग भी नहीं होता। इस जगत में सब मिलकर एक जीव नहीं है, अनन्त जीव हैं, और प्रत्येक जीव भिन्न-भिन्न है। प्रत्येक जीव में ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अस्तित्वादि अनन्त गुण हैं; उनका ज्ञान न होने से संसार में एक समय की विकारदशा पर्याय में अपने कारण से होती है; पर के कारण नहीं। प्रतिसमय ऐसी अनन्त पर्यायें होती हैं, उनमें कर्म निमित्त हैं। कर्मरूप से परिणमन होने योग्य स्कन्ध हैं - उनका द्रव्य, गुण, पर्याय समझना चाहिये। इसप्रकार अनेकरूप से वस्तु का स्वरूप सर्वज्ञ के अतिरिक्त अन्यत्र है ही नहीं। व्यवहार से भी वस्तु का स्वरूप माने बिना नाम से भले ही योग कहा जाये; किन्तु है वह योगाभास ही। यहाँ तो आत्मा के भानसहित अपने में अन्तर पर्याय को उत्कृष्टपने जोड़ता है, वह योगीश्वर है। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : वस्तु के स्वरूप का निश्चय किसप्रकार करना चाहिए ?

उत्तर : वस्तु के स्वरूप का निश्चय इसप्रकार होना चाहिए कि इस जगत् में मैं स्वभाव से ज्ञायक ही हूँ तथा मुझसे भिन्न इस जगत् के जड़-चेतन समस्त पदार्थ मेरे ज्ञेय ही हैं। विश्व के पदार्थों के साथ मात्र ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध को छोड़कर मेरा अन्य कोई सम्बन्ध नहीं है। कोई भी पदार्थ मेरा नहीं है और न मैं किसी के कार्य को करता हूँ। प्रत्येक पदार्थ अपने स्वभाव-सामर्थ्य से ही उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूप परिणमन कर रहा है, उसके साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। जो जीव ऐसा निर्णय करे, वही पर के साथ का सम्बन्ध तोड़कर उपयोग को निजस्वरूप में लगाता है, इसलिए उसी को स्वरूप में चरणरूप चारित्र होता है।

इसप्रकार चारित्र के लिए प्रथम वस्तुस्वरूप का निर्णय करना चाहिए।

प्रश्न : न्याय और तर्क से तो यह बात जमती है; किन्तु अन्दर में जाने का साहस क्यों नहीं हो पाता ?

उत्तर : अन्दर में पहुँचने का जितना पुरुषार्थ होना चाहिए, उतना नहीं बन पाता; इसीलिए बाहर भटकता रहता है। अन्दर जाने की रुचि नहीं; इसलिए उपयोग अन्दर नहीं जाता ।

प्रश्न : वर्तमान में कर्मबन्धन है, हीनदशा है, रागादिभाव भी वर्तते हैं तो ऐसी दशा में शुद्धात्मा की अनुभूति कैसे हो सकती है ?

उत्तर : रागादिभाव वर्तमान में वर्तते होने पर भी वे सब भाव क्षणिक हैं, विनाशीक हैं, अभूतार्थ हैं, झूठे हैं; अत: उनका लक्ष्य छोड़कर त्रिकाली ध्रुव शुद्ध आत्मा का लक्ष्य करके आत्मानुभूति हो सकती है। रागादिभाव तो एक समय की स्थितिवाले हैं और भगवान आत्मा त्रिकाल टिकनेवाला अबद्धस्पृष्टस्वरूप है। इसलिए एक समय की क्षणिक पर्याय का लक्ष्य छोड़कर त्रिकाली शुद्ध आत्मा का लक्ष्य करते ही, दृष्टि करते ही आत्मानुभूति हो सकती है।

प्रश्न : ज्ञानी जीव सविकल्प द्वारा निर्विकल्प होता है और सम्यक्त्वसन्मुख जीव भी सविकल्प द्वारा निर्विकल्प होता है। उन दोनों की विधि का प्रकार एक ही है या उसमें कोई विलक्षणता है ?

उत्तर : ज्ञानी जीव सविकल्प द्वारा निर्विकल्प होता है, उसे तो आत्मा का लक्ष्य हुआ है, आत्मा लक्ष्य में है और उसमें एकाग्रता का विशेष पुरुषार्थ करने पर विकल्प छूटकर निर्विकल्प होता है; परन्तु स्व-सन्मुख जीव को तो अभी आत्मा का लक्ष्य ही नहीं हुआ। विकल्प से आत्मा का लक्ष्य बाहर-बाहर हुआ है, उसको अन्दर पुरुषार्थ उग्र होने पर सविकल्पता छूटकर निर्विकल्पता होती है। इसप्रकार निर्विकल्प होने की विधि का प्रकार एक होने पर भी ज्ञानी ने तो वेदन से आत्मा जाना है और स्वसन्मुख वाले ने बाहर-बाहर आनन्द के वेदन बिना आत्मा को जाना है।

(पृष्ठ 14 का शेष ...)

त्रिकाल की अपेक्षा से एक समय की पर्याय को भिन्न कहा है। सामान्य की अपेक्षा से विशेषभाव भिन्न है और विशेष की अपेक्षा से सामान्य भी भिन्न है, अन्य है। परमपारिणामिकभाव की अपेक्षा से चार भाव अन्य हैं और चार भावों की अपेक्षा से परमपारिणामिकभाव अन्य है; अत: अन्य भावों के आश्रय से धर्म नहीं होता, किन्तु **एकरूप पारिणामिकभाव के आश्रय से ही धर्म होता है।**[१]

कारणपरमात्मा कहो, शुद्ध चैतन्यस्वभाव कहो, चिदानन्द भगवान कहो, निरुपाधि स्वभावभाव कहो, सब एक ही है। सम्यग्दर्शन का विषय, द्रव्यदृष्टि का विषय कारणपरमात्मा है; वास्तव में वही आत्मा है और वही उपादेय है अर्थात् उसी का आश्रय सदैव करने योग्य है।[२]''

उक्त सम्पूर्ण कथन का आशय यह है कि परमपारिणामिकभावरूप स्वयं के आत्मा से भिन्न जीवादि बाह्य तत्त्व परपदार्थरूप होने से अपनापन स्थापित करने योग्य नहीं है; अत: हेय हैं और उनसे भिन्न **कर्मोपाधिजनित विभावभावों से निरपेक्ष परमपारिणामिक भावरूप अपना आत्मा अपनापन स्थापित करने योग्य है; अत: उपादेय है।**

वस्तुत: बात यह है कि यहाँ परमभावग्राहीशुद्धद्रव्यार्थिकनय अथवा परम-शुद्धनिश्चयनय के विषयभूत **परमपारिणामिकभावरूप कारणपरमात्मा को ही आत्मा कहा गया है;** क्योंकि उसके आश्रय से ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र प्रगट होते हैं। उक्त आत्मा में ही अपनापन होने का नाम निश्चय सम्यग्दर्शन, उसे ही निजरूप जानने का नाम निश्चय सम्यग्ज्ञान और उसमें ही जम जाने-रम जाने का नाम निश्चय सम्यक्चारित्र है। अत: एकमात्र वही उपादेय है तथा उससे अन्य जो कुछ भी है, वह सभी हेय है।

यद्यपि उक्त कथन सभी भव्यजीवों के लिए है; तथापि यहाँ मुनिराजों की मुख्यता से बात की है। यही कारण है कि यहाँ मुनिराजों का स्वरूप भी सहजभाव से स्पष्ट हो गया है।

यहाँ मुनिराजों को सहजवैरागी, परद्रव्यों से पराङ्मुख, जितेन्द्रिय, अपरिग्रही, जिनयोगीश्वर और स्वद्रव्य में रत कहा गया है। ●

---

१. नियमसार प्रवचन : आत्मधर्म जनवरी, १९७९, पृष्ठ २ २. वही, पृष्ठ १६

समाचार दर्शन -

चैतन्यधाम में महासमिति का अधिवेशन

चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ दिनाँक 9 व 10 जनवरी को गुजरात प्रांत में पहली बार आयोजित दिगम्बर जैन महासमिति का राष्ट्रीय अधिवेशन भारतवर्ष के कोने कोने से पधारे तीन हजार प्रतिनिधियों की उपस्थिति में धूमधाम से संपन्न हुआ। इसके विस्तृत समाचार आपको महासमिति पत्रिका में पढने को मिलेंगे।

अधिवेशन उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये डॉ. हुकमचंद भारिल्ल ने कहा कि अभी तक हम महासमिति का अधिवेशन किसी न किसी पंचकल्याणक में किन्हीं न किन्हीं प्रभावशाली सन्तों के सानिध्य में करते रहे हैं। उनमें न तो कभी इतनी संख्या रही और जो रही भी वह पंचकल्याणक के लिये सन्तों के प्रभाव से जुटी जनता की थी; किन्तु आज यह 3 हजार व्यक्तियों का विशाल जनसमुदाय मात्र महासमिति के अधिवेशन में आया है।

यद्यपि इसमें सभी का महासमिति के प्रति सद्भाव तो प्रदर्शित होता ही है; पर इसमें महासमिति के अध्यक्ष श्री विजय जैन, महामंत्री श्री जीवेन्द्र जैन एवं उनकी टीम के अथक् प्रयास को भी इसका श्रेय जाता है। वे पिछले छह माह से दिन रात एक किये हैं।

उन्होंने अपनी बात को आगे बढाते हुये कहा-इस महासमिति से मेरा संबंध इसके जन्म के साथ से ही है। महासमिति की जन्मकथा सुनाते हुये उन्होंने कहा कि इस अवसर पर तीन व्यक्तियों का उल्लेख किये बिना नहीं रह सकता; सबसे पहले तो मैं उन आध्यात्मिकसत्पुरुषकानजी स्वामी को याद करता हूँ, जिनका दिया हुआ तत्त्वज्ञान मेरे पास है, दूसरे आचार्य विद्यानंदजी महाराज हैं, जो हमेशा समाज के सभी वर्गों को जोड़कर रखने के प्रयास में रहते हैं। तीसरे उन बाबूभाईजी को, जिनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर मैंने वर्षों तक समाज सेवा एवं तत्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य किया है।

अन्त में उन्होंने सभी मुमुक्षुओं को महासमिति का सदस्य बनने की प्रेरणा दी। इससे पूर्व उनका महासमिति और चैतन्यधाम की ओर से भाव भीना स्वागत व सम्मान किया गया।

दूसरे दिन 10 जनवरी को प्रात: 9.30 से 10.30 तक डॉ. भारिल्ल का णमोकार महामंत्र पर मार्मिक प्रवचन हुआ, जिसे महासमिति के अधिवेशन में पधारे सभी प्रतिनिधियों ने दत्तचित्त होकर सुना।

महासमिति में संपूर्ण जैन समाज को शतप्रतिशत शिक्षित करने एवं राष्ट्र के निर्माण में जैन समाज के योगदान विषय पर चर्चा हुयी। इस अधिवेशन में गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रदीप जैन आदित्य भी पधारे थे।

चैतन्यधाम में नवनिर्मित जिनमंदिर, स्वाध्याय भवन और उत्तम आवास व्यवस्था देखकर सब आगन्तुकों का चित्त अत्यंत प्रसन्न था और चैतन्यधाम के अध्यक्ष अमृतभाई और उनकी टीम सबकी सेवा में तन मन धन से समर्पित थी।

प्रवचन एवं सम्मान समारोह

बैंगलोर (कर्नाटक) : अ. भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा आयोजित दक्षिण भारत की यात्रा के उपरान्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल यहाँ दो-तीन दिन रुके। प्रात: डॉ. भारिल्ल के समयसार गाथा-74 पर एवं सायं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन हुये।

30 दिसम्बर,09 को प्रात: प्रवचनोपरान्त सम्मान समारोह आयोजित हुआ, जिसमें भारिल्ल बन्धुओं की तीन पीढियों का श्री भबूतमलजी भंडारी की तीन पीढियों ने सम्मान किया। सम्मान में हार, श्री फल, शॉल एवं प्रशस्ति-पत्र समर्पित किये गये। समाज के सभी प्रमुख व्यक्तियों ने भारिल्ल बन्धुओं का सम्मान किया।

इस अवसर पर बोलते हुये भबूतमलजी भण्डारी भावुक हो उठे, उनकी आँखों में अश्रुधारा बह पडी। रुंधे कण्ठ से उन्होंने कहा पूज्य गुरुदेवश्री ने हम सब पर अनन्त उपकार किया है, उन्होंने जो तत्त्वज्ञान हमें बताया; उसे दोनों भारिल्ल बन्धु देश-विदेश में जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। उनका भी जितना उपकार माना जाये कम ही है। उनका हीरक जयन्ती वर्ष है, इस अवसर पर हम उन्हें अनेक बधाईयाँ देते हैं और उनके शतायु सक्रिय जीवन की कामना करते हैं।

प्रवीणभाई दोशी ने कहा कि गुरुदेवश्री ने क्रमबद्धपर्याय समझाई थी, क्रमबद्धपर्याय पुस्तक लिखकर और प्रवचनों के माध्यम से डॉ. भारिल्ल ने उसे जन-जन की वस्तु बना दिया। उन्होंने और भी अनेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखी है, जिनकी गुरुदेवश्री ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।

उनकी हीरक जयन्ती पर हम उन्हें शत्-शत् बधाईयाँ देते हैं। दोनों भाईयों ने जो कार्य किये हैं, उनकी जितनी प्रशंसा की जाये वह थोडी ही है। दोनों भाई शतायु होकर जिनवाणी की सेवा करते रहें।

पाठ्यक्रम में भारिल्ल द्वय की पुस्तकें सम्मिलित

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 9 जनवरी को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पीएच.डी. कोर्स वर्क के द्वितीय पेपर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की **परमभावप्रकाशक नयचक्र** एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की **इन भावों का फल क्या होगा** पुस्तकें रखी गयीं हैं।

फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने बताया कि राजस्थान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ही ऐसा विश्वविद्यालय है, जिसमें छात्र द्वारा 50 अंक का पीएच.डी प्री-टेस्ट एवं इन्टरव्यू पास करने के पश्चात् ही उसे पीएच.डी. के लिये प्रवेश मिलता है। टेस्ट के द्वितीय प्रश्न पत्र में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की पुस्तकों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है।

भारिल्ल द्वय की पुस्तकों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कराने के लिये अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के प्रदेशप्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं जैनविद्या एवं प्राकृत विभागाध्यक्ष के डॉ. एच. सी. जैन का विशेष प्रयास रहा। **– डॉ. महावीरप्रसाद जैन**

आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

सोनागिरि-दतिया (म.प्र.) : आराधना व प्रभावना की पवित्र भावना से बालकों में धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों के निर्माण हेतु सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में निर्मित 'आचार्य कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन-सोनागिरि' का चतुर्थ-सत्र 1 अप्रैल 2010 से प्रारंभ होने जा रहा है।

इस वर्ष कक्षा 8 व 9 में 10-10 छात्रों को प्रवेश दिया जाना है। प्रवेश उन्हें ही दिया जायेगा जो हिन्दी माध्यम से न्यूनतम 60% अंक प्राप्त हों एवं जैनधर्म के सिद्धांतों में दृढ आस्था रखते हों। साक्षात्कार पद्धति द्वारा प्रवेश प्राप्त छात्रों को आवास, भोजन एवं धार्मिक शिक्षा आदि की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। लौकिक शिक्षा सशुल्क प्रदान की जावेगी।

प्रतिभाशाली तत्वरुचिवंत छात्रों को विशेष प्राथमिकता । इच्छुक छात्र आवेदन पत्र मंगाकर 20 फरवरी 2010 तक जमा करा देवें, जिससे उन्हें 27 से 31 मार्च तक होने वाले ''प्रवेश पात्रता शिविर'' में बुलाया जा सके।

शुद्धात्मप्रकाश शास्त्री (प्राचार्य), आचार्य कुन्दकुन्द विद्यानिकेतन,
तीर्थधाम-पंचतीर्थ, कुन्दकुन्दनगर, सिद्धक्षेत्र सोनागिरि, जिला-दतिया (म.प्र.)
फोन : 07522-285002, 09893224022

(पृष्ठ 16 का शेष ...)

तीर्थयात्रियों के लिये उपयोगी सामग्री सहित तैयार की गई विशेष यात्रा किट का विमोचन श्री किरणभाई गाला मुम्बई ने किया। किट के रूप में तैयार किये गये आकर्षक बैग में यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखकर पूजन का बटुवा, पानी छानने की थैली , यात्रा के दैनिक कार्यक्रम का फोल्डर, सुन्दर कैप, मुखवास, यात्रियों हेतु पर्सनल डायरी दी गई। सभी यात्रियों के नाम फोटो एवं संक्षिप्त आवश्यक जानकारी सहित विशेषरूप से तैयार किये गये परिचय पत्र एवं लगेज टैग सभी यात्रियों को कोरियर द्वारा उनके घर पहले से ही भेज दिये गये थे।

उद्घाटन समारोह का संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर ने एवं मंगलाचरण श्रीमती ज्योति गाला मुम्बई ने किया।

यात्रा के दौरान प्रतिदिन तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार की गाथा-74 पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त श्रवणबेलगोला में उपाध्याय 108 ज्ञानसागरजी महाराज एवं स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारकजी के प्रवचन, चन्द्रगिरि पर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, कारकल में पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन एवं हेलीबिड में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही यात्रा के दौरान लगभग 40 शास्त्री विद्वानों का समागम रहा।

7 दिनों में 10 बसों, 9 कारों एवं 3 ट्रकों में कुल 379 यात्रियों और 94 स्टॉफ के काफिले ने लगभग 1270 कि.मी. की दूरी तय करते हुये बैंगलोर से धर्मस्थल, वेनूर, कारकल, मूडबिद्री, हलेबिड, श्रवणबेलगोला (चन्द्रगिरि, विंध्यगिरि), कम्बदहल्ली, जिननाथपुर, कनकगिरि, गोम्मटगिरि, मैसूर आदि क्षेत्रों की भक्तिभाव पूर्वक वंदना की।

दक्षिण तीर्थयात्रा समापन समारोह

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) : यात्रा का समापन समारोह दिनांक २८ दिसम्बर को श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर तीर्थयात्रियों ने अपने हृदयोद्गार अत्यन्त भावुक होकर सुनाये, जिससे सारी सभा गद्गद् हो उठी। सभी ने इस यात्रा को अत्यंत सफल और ऐतिहासिक बताते हुये, इसे आगामी वर्षों में भी निरंतर आयोजित करने की भावना व्यक्त की। अनेक यात्रियों ने तो अभी से आगामी वर्षों में आयोजित होने वाली सभी यात्राओं हेतु बुकिंग करने की बात कही। यात्रा का अत्यंत भावुक क्षण वह था, जब सब यात्री परस्पर एक-दूसरे से विदा ले रहे थे।

यात्रा के संयोजक श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने इस अवसर पर भरे कंठ से इस सफल आयोजन के लिये सभी यात्रियों, बस लीडरों, तीर्थक्षेत्रों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं, इवेन्ट आर्गनाइजर एवं यात्रा को सफल बनाने में प्रत्यक्ष-परोक्षरूप से सहयोग देने वाले सभी महानुभावों को धन्यवाद देते हुये आभार व्यक्त किया।

फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में सभी बसलीडरों, पीयूष जैन, धर्मेन्द्र शास्त्री एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल का विशेषरूप से स्वागत करते हुये हार्दिक अभिनंदन किया। साथ ही संघ के साथ यात्रा कर रहे सभी विद्वानों का विशेष रूप से स्मरण किया गया, जिनकी उपस्थिति ने इस यात्रा में चार चांद लगाये।

इस पूरी यात्रा की सफलता में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के अलावा सभी बस लीडरों अनेकांत भारिल्ल मुम्बई, अंकित जैन लूणदा, सजल जैन सिंगोडी, विवेक जैन सागर, राहुल जैन नौगांव, विकास जैन इन्दौर, दीपेश जैन अमरमऊ, सर्वज्ञ भारिल्ल जयपुर, आराध्य टडैया एवं देवांग कुमार गाला मुम्बई इवेन्ट आर्गेनाइजर श्री विजय नवलखा अहमदाबाद, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन बैंगलोर से श्री भभूतमल चम्पालाल रमेशजी भंडारी परिवार एवं श्री शरदभाई जैन का श्रम विशेषरूप से सराहनीय है।

मंगलार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

मङ्गलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहां आत्मार्थी छात्रों को आध्यात्मिक व लौकिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन संचालित है। इस वर्ष मात्र कक्षा आठ में ही प्रवेश देने का निर्णय लिया है। अत: जो छात्र कक्षा सात में 60 या उससे अधिक प्रतिशत में उत्तीर्ण हों, वे कक्षा आठ के लिये आवेदन कर सकते हैं। अंग्रेजी माध्यम के छात्र दिल्ली पब्लिक स्कूल एवं हिन्दी माध्यम के छात्र के. एल. जैन इण्टर कॉलेज में अध्ययन करते हैं। प्रवेश के इच्छुक छात्र प्रवेश फार्म मंगाकर तथा भरकर 15 फरवरी 2010 तक निम्न पते पर भेजें।

सम्पर्क सूत्र : संजय शास्त्री, प्राचार्य, भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन, अलीगढ-आगरा मार्ग, सासनी, महामायानगर (उ.प्र.), मो. 09897069969, 9927013722

हार्दिक बधाई !

एल्लिमुन्नोली-बेलगाव (कर्नाटक) : श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित राजेन्द्रजी पाटील शास्त्री ने बिहार के मुझफ्फरपुर के डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय से प्राकृत एवं जैनशास्त्र विषय की एम.ए. परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। भ. महावीर की जन्मस्थली वैशाली वासोकुण्ड ग्राम की राष्ट्रीय प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध महाविद्यालय ने दिनांक 27 नवम्बर 2009 को स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मान किया।

महाविद्यालय परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। आपको हार्दिक बधाई !

(पृष्ठ 17 का शेष ...)

स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारकजी ने अपने मार्मिक उद्बोधन में डॉ. भारिल्ल के ज्ञान की महिमा का बखान करते हुये उन्हें **ज्ञान कुबेर** विशेषण से संबोधित किया। साथ ही उन्होंने लगभग 35-40 वर्षों पुराने गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की श्रवणबेलगोला यात्रा से जुडे अपने अनेक संस्मरण सुनाये; उन्होंने कहा कि व्याख्यान में समय का एवं जीवन में समयसार का ध्यान रखना चाहिये। भारिल्लजी की प्रशंसा करते हुये उन्होंने कहा कि आज इन जैसे विद्वान खोजना बहुत दुर्लभ है, जिन्होंने अपने बच्चों एवं बच्चों के बच्चों को भी विद्वान बनाया है।

इस अवसर पर श्री वीतराग-विज्ञान यात्रा संघ के लगभग 400 यात्रियों के अतिरिक्त वहाँ के स्थानीय एवं अन्य यात्रीगण भी मौजूद थे। आयोजित सभा के पूर्व बैण्ड बाजों के साथ भण्डार बसदि की तीन प्रदक्षिणा देते हुये जिनवाणी शोभायात्रा निकाली गई।

समारोह का संचालन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने किया। मंगलाचरण पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा ने किया।

सायंकालीन सभा में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारकजी का प्रवचन हुआ, पश्चात् डॉ. भारिल्ल ने अपने एक प्रवचन के माध्यम से पूरे समयसार का सार बताया।

दोनों प्रवचनों के बीच भट्टारकजी द्वारा विद्वत्सम्मान में पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री के साथ-साथ यात्रा संघ की दस बसों के दस बस लीडरों (शास्त्री विद्वानों) का सम्मान किया गया।

भट्टारकजी को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भारिल्लजी के परिवार में बेटे, पोते, दामाद, नाती आदि मिलाकर 17 प्रवचनकार विद्वान हैं, जो अपने-अपने बिजनेस के साथ नियमित जिनवाणी के अध्ययन/अध्यापन एवं स्वाध्याय में संलग्न रहते हैं। आपने सभी लोगों को विशेषरूप से अपने कक्ष में बुलाकर भारिल्ल परिवार के प्रत्येक सदस्य का यथोचित सम्मान किया और सभी से लगभग 1 घंटे तक तत्वचर्चा की।

इस प्रसंग पर श्री टोडरमल महाविद्यालय के छात्र सजल जैन ने समयसार ग्रन्थाधिराज की गाथायें नम्बर से सुनाई, जिसे सुनकर भट्टारकजी गद्गद् हो गये और छात्र को अपने हाथ से पुरस्कृत किया। ●

शोक समाचार

1. बेगू (राज.) निवासी श्री भागचंदजी टोंग्या की मातुश्री श्रीमती मदनबाई का 86 वर्ष की आयु में दिनांक 29 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 11000/- की राशि प्राप्त हुयी है।

2. विदिशा (म.प्र.) निवासी श्री कस्तूरचंदजी का दिनांक 18 नवम्बर को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी तो थे ही प्रतिवर्ष दशलक्षण में प्रवचनार्थ भी जाया करते थे। श्री टोडरमल महाविद्यालय की मुक्त कंठ से प्रशंसा किया करते थे।

3. लाडनूं (राज.) निवासी श्री नेमीचंदजी सरावगी (पाण्ड्या) का दिनांक 12 दिसम्बर को शुभपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, टोडरमल महाविद्यालय के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग निरंतर बना रहता था।

4. सागर (म.प्र.) निवासी श्रीमंत सेठ श्री डालचंदजी जैन के अनुज श्री प्रेमचंदजी जैन की धर्मपत्नी **श्रीमती आशारानी जैन का** दिनांक 15 दिसम्बर को अत्यंत शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं।

5. बड़नगर (म.प्र.) निवासी श्री अनिलकुमारजी पाटोदी के **सुपुत्र चि. आशीष कुमारजी पाटोदी का** दिनांक 28 दिसम्बर को अल्पायु में देहावसान हो गया।

6. कोलकाता निवासी श्री नेमीचंदजी पाण्ड्या का देहावसान हो गया। आप कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी थे तथा कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के प्रमुख स्तम्भ थे। टोडरमल स्मारक से आपका विशेष अनुराग था।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही हमारी मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

11 से 14 फरवरी	भोपाल	सिद्धचक्र विधान एवं हीरक जयंती
15 से 17 फरवरी	चन्देरी (म.प्र.)	मंदिर शिलान्यास एवं हीरक जयंती
17 व 18 फरवरी	टीकमगढ	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
19 से 21 फरवरी	ललितपुर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
10 व 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 से 14 मार्च	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
15 व 16 मार्च	खड़ैरी (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
27 व 28 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
11 मई से 3 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर एवं हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
01 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर
04 से 11 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
12 से 22 सितम्बर	बड़ौदा	दशलक्षण महापर्व